करहेड़ा
Karhera

चित्र संग्रह
A photo book

प्रस्तुतकर्ता: रमीला बिष्ट, लिंडा वाल्डमेन, नेथन ऑक्सले और अदिति भोनगिरी

Produced by: Ramila Bisht, Linda Waldman, Nathan Oxley, Aditi Bhonagiri

रिसर्च नेतृत्व: फियोना मार्शल और ऋतू प्रिया

Research Lead: Fiona Marshall and Ritu Priya

रिसर्च दाल: प्रितपाल रंधावा, छाया शर्मा, राजश्री सहरिया, अभिनव कपूर, बुशरा रिज़वी, इमा चोपड़ा, मेघना अरोड़ा, यासिर हामिद, कुमुद टेरेसा, ज्योतिस्मिता सरमा, सुमेघा शर्मा प्रदीप टंडन, राहुल राठौर

Research team: Pritpal Radhawa, Chaya Shamma, Chaya Devi, Rajashree Saharia, Abhinav Kapoor, Bhushra Rizvi, Ima Chopra, Meghna Arora, Yasir Hamid, Kumud Teresa, Jyotishmita Sarma, Sumegha Sharma, Pradeep Tandon, Rahul Rathore

अनुवाद: शुभम मिश्रा

Translation: Shubhan Mishra

This book was produced as part of the 'Risks and Responses to Urban Futures' (NE/L001292/1) project, funded with support from the Ecosystem Services for Poverty Alleviation (ESPA) programme. The ESPA programme is funded by the Department for International Development (DFID), the Economic and Social Research Council (ESRC) and the Natural Environment Research Council (NERC).

Copyright 2016. No images are to be reproduced without consent of the publishers.

भूमिका

करहेड़ा शहर और गाँव के मिलने की एक जगह है, एक ऐसी जगह जो आज भारत में कहीं भी देखी जा सकती है. पिछले कुछ दशकों में दुनिया के हर कोने में शहरों, उद्योगों आदि में तेज़ी से बदलाव आया है. इसलिए इस तरह की जगहें लगभग हर जगह पाई जा सकती हैं. सभी जगह इन गतिविधियों का असर वहाँ के पर्यावरण, स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने पर पड़ा है. पर हरेक जगह का अपना एक इतिहास और परिस्थितियाँ होती हैं. करहेड़ा, उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद जिले – जो देश की राजधानी दिल्ली से सटा है और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का भाग है - का एक परिनगरीय गाँव है.

यह फ़ोटो बुक करहेड़ा गाँव के बदलते पर्यावरण, खेती, समाज, आजीविका और शासन प्रणाली को समझने के लिए किये गए एक शोध का नतीजा है. हम ऐसा मानते हैं कि इन सभी पहलुओं की तमाम बारीकियों को देख-समझकर ही नगर योजन और विकास होना चाहिए. विकास को एक आधार देने के लिए समाज के अनुभव, ख़ासकर उस वर्ग के जो की सबसे पिछड़ा है - बहुत ज़रूरी हैं. आर्थिक विकास, पर्यावरण की सरंक्षण और सभी के कल्याण के लिए यह समझना ज़रूरी है कि किससे फ़ायेदा हो सकता है, क्या नुकसानदेह है और किसपर क्या असर हो सकता है. हमारी रिसर्च टीम ने करहेड़ा का दौरा सबसे पहले सन २००६ में किया था. तब से अब तक गाँव में काफ़ी बदलाव आ गए हैं.

इस रिसर्च से यह सामने आता है कि करहेड़ा जैसी जगहें उदाहरण हैं कि हम अपने गाँव और शहरों के भविष्य के लिए क्या कर रहे हैं.

इस फ़ोटो बुक को बनाने का एक कारण करहेड़ा गान के लोगों को कुछ वापिस देना है. साथ मिल बैठ कर इसे देखने से स्थानीय लोग शायद ख़ुद अपने वर्तमान और भविष्य के बारे में सोचें, ऐसी उम्मीद है. करहेड़ा का उदाहरण देकर यह भी दिखाया जा सकता है कि ऐसी सभी जगहों की बेहतरी के लिए वहीं के अनुभवों से निकले हुए तरीक़े ही कारगर हो सकते हैं.

हम करहेड़ा के निवासियों के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होनें अपने चित्र, अनुभव और समय हमारे साथ साझा किये. हम लोगों को और बहुत सारे चित्र दिए गए थे और हम लोगों ने ख़ुद काफ़ी चित्र करहेड़ा में खींचे. पर उन सभी को इस किताब में डालना संभव नहीं है. जिन सभी के चित्र इसमें नहीं आये हैं, हम उन सब के क्षमा प्रार्थी हैं. इस काम में सहयोग के लिए सभी निवासियों को धन्यवाद.

Introduction

Karhera reflects the interface between the rural and urban, a reality of vast areas of India at the present time. Similar conditions can be found to prevail in other countries across the world, since the past decades have seen rapid changes in infrastructure development, urbanisation, and industrialisation, impacting on environmental conditions, economic activities, health and the social fabric of communities.

However, each place is located within its history and specific conditions. Karhera is a peri-urban village in Ghaziabad, a district of the state of Uttar Pradesh, adjoining the country's capital city of Delhi and forming part of the National Capital Region.

This photo book is one of the outcomes of a research project that has studied the conditions in this rural-urban interface for the changes in its environment, agricultural activity, social and livelihood patterns, and governance mechanisms. It seems important to us that these dimensions, and the relationships between them, are considered when urban planning and development is being undertaken. The community's experience and perceptions are relevant for basing the development on ground realities, especially those of marginalized residents. An understanding of what will lead to improvements in life conditions and what will result in negative consequences, and for whom, is central to be able to plan effectively for economic prosperity, environmental integrity, health and wellbeing of all. Karhera has changed a great deal since our research team first visited in 2006. This project, among other studies that have been done by us and others, show that the changes in such locations are important markers for how we are shaping our future in urban and rural areas.

This photo book has been produced with the desire to give back something to the residents of Karhera that reflects their experience and, we hope, helps in collective reflection for how they wish to shape their present and future. It is also to present to others what Karhera is experiencing, with the belief that it is only with such knowledge that any realistic measures can be designed for benefitting those living in Karhera and other rapidly urbanizing places.

We are grateful to the Karhera residents who shared their time, personal experiences and photos with us. We were given many more photographs and took a large number during the research. However, we were unable to reproduce all in this photobook. Our apologies to those whose photos we could not include, and our deep appreciation for the cooperation of all residents.

Ritu Priya and Fiona Marshall

अपने खेतों का नक्शा बनाती महिलायें

Women of Karhera mapping their agricultural fields

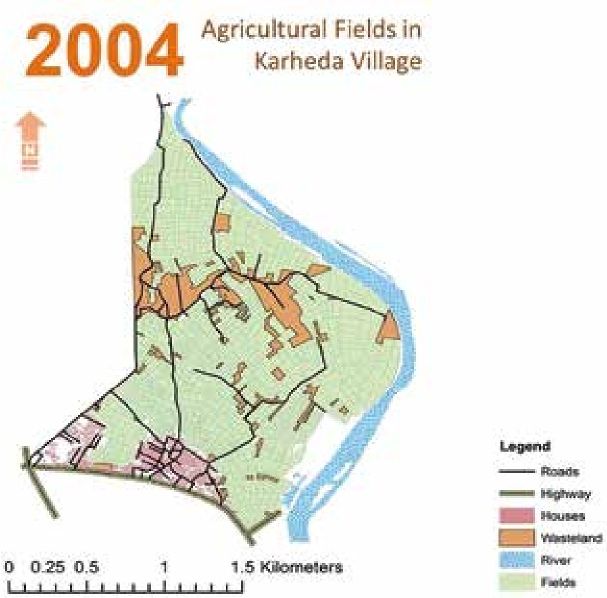

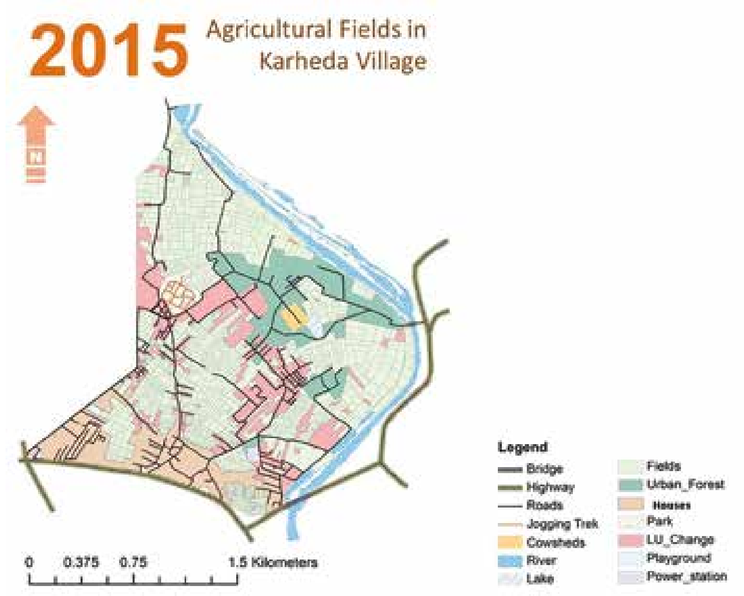

Maps produced by the JNU spatio-temporal mapping team, led by Prof Milap Punia

इस खेत में हम पालक और कई दूसरी सब्ज़ियाँ उगाते हैं. जैसे कई तरह की सरसों, मेथी और कई अन्य.

‘Here on this land we have spinach and along with this we have other vegetables. We have sarson [mustard], we have a variety of sarson, we have methi [fenugreek] and many more.’

खेती और पर्यावरण | Agriculture and Environment

खेती और पर्यावरण

करहेड़ा, आज से कोई बीच साल पहले एक मुख्यतः खेतिहर गाँव था. आज दिल्ली और गाज़ियाबाद के बीच में फंसकर एक परिनगरीय गाँव बन चुका है. आसपास शहर बढ़ने के बावजूद यहाँ खेती होती है. खेती को दिए जाने वाले इस जोर ने ही करहेड़ा को आस-पास के दूसरे तेज़ी से शहरी होती जगहों से अलग किया हुआ है. लेकिन इसकी खेती का सवभाव और स्तर काफ़ी बदल चुका है. किसी समय अनाज जैसे मक्का, धान, गेंहूँ और चारा यहाँ की मुख्य फ़सलें थीं. साथ में कई तरह की सब्ज़ियाँ, ख़ासकर गाजर भी उगाई जाती थीं. पर अब, शहर की ताज़ा पालक की मांग को पूरा करने के लिए पालक ही सबसे ज़्यादा लगाई जाती है.

शहरीकरण का असर पर्यावरण और खेती में उपयोग होने वाले साधनों, दोनों ही पर पड़ा है. आज, खेती की ज़मीन कम है और मवेशियों को रखने वाली जगहें भी थोड़ी ही हैं. साथ ही, बाक़ी पर्यावरणीय संसाधन जैसे पानी भी प्रदूषित हो चले हैं. इससे खेती करते रहना मुश्किल हो गया है. पर साथ ही खेती के नए तरीक़े और कई नई संभावनायें भी सामने आई हैं.

Agriculture and Environment

Karhera is a village which, until about two decades ago, was predominantly a farming village. Today, it is a peri-urban village sandwiched between Delhi and Ghaziabad. Despite experiencing urban growth all around it, Karhera is still a place where agriculture is practiced. This emphasis on agriculture forms an important aspect of Karhera and sets it apart from the rapidly-urbanising spaces around it. However, the nature and scale of this agriculture has changed considerably. Cereal crops – large fields of maize, wheat, rice and sorghum – were the main agricultural produce of Karhera, complemented by a wide variety of vegetables, and especially carrots. Today, spinach is most common and is grown to take advantage of an urban demand for fresh vegetables.

Urbanisation has also affected the environment and the resources that people use for agriculture. Today there is far less land on which to produce crops, and there are fewer spaces to keep livestock. In addition, other environmental resources – such as water – have become polluted and degraded. This has made it hard to continue farming, but has also introduced new opportunities and new ways of farming.

करहेड़ा का एक दृश्य

View of Karhera

दुधारू पशु जैसे गाए-भैंस लगातार कम होते जा रहे हैं. इनको रखने के बाड़े कुछ मरम्मत करके बाहर से आनेवाले लोगों को रहने के लिए किराय पर दिया जाने लगा है. “मवेशियों की रखने की अब जगह कहाँ है? पर यह सिर्फ जगह की ही बात नहीं है, पशुओं को प्यार भी चाहिए और रख-रखाव भी. और उन्हें खाना भी चाहिए.

Milch animals, such as buffalo and cows, are becoming increasingly rare. Renovated cattle sheds are now rented out as residential accommodation for migrants: ‘Where is the place now for keeping cattle? But it is not just about space – buffalo need love and care. They need food’.

पशु पालक पहले अपने मवेशियों को हिंडन में नहलाने ले जाते थे. 'हिंडन अब काफ़ी प्रदूषित हो चुकी है. पहले मछलियों की कई प्रजातियाँ दिख जाती थीं, अब सिर्फ कूड़ा-करकट और रासायनिक कचरा मिलता है.'

Livestock owners used to take their buffalo to bath in the Hindon River: 'The river Hindon is vastly affected by pollution. Earlier we have seen various kinds of fish in this river, but nowadays one can only find garbage and chemical waste in the river.'

करहेड़ा में टैंकर से होती पानी की सप्लाई – क्योंकि यहाँ के जोहड़, तालाब सड़क बनाने के लिए पट चुके हैं. कभी त्योहार-उत्सवों पर करहेड़ा के लोग हिंडन से भी पानी लाते थे. पर अब यह पानी 'काला' है और पीने लायक नहीं है.

Drinking water being delivered by tractor to Karhera as the community ponds (jhora) have been filled in in order to build roads. Karhera's residents also used to fetch water from the Hindon river for special festivals, but today this water is seen as 'black' and is no longer drinkable.

ट्यूबवेल का पानी

Groundwater from tube well

इसी पानी से हम (पालक के) खेतों की सिंचाई करते हैं. हमारे पास और कोई चारा नहीं है.

Domestic waste water. ‘We use this water for irrigation [of the spinach fields]. We do not have a choice’.

कुछ ही लोग हिंडन के पानी से सिंचाई करते हैं. पर यह ज़्यादा सफल नहीं हुआ. इसके लिए सुचारू पम्पिंग व्यवस्था की ज़रुरत है.

‘There are very few who are farming with water from the Hindon River, it’s not very successful. We need to establish the proper pumping system for doing this.’

पुरूषों के कम योगदान के कारण महिलायों की खेती में भूमिका बढ़ गयी है

As men have less involvement in agriculture, women are becoming more engaged.

खेतों में नेहरों/नालियों से सिंचाई

Channelling drainage water over the fields

बाज़ार के लिए तैयार होती हुई पालक   Preparing spinach for the market

सुबह ७:४०. पटेरा और अन्य साधन लेकर घर से निकलती हूँ.

7.40 am: Leaving home with pattera and other tools

सुबह ७:४९. खेत पहुँच गई

7.49 am: Arriving at my fields

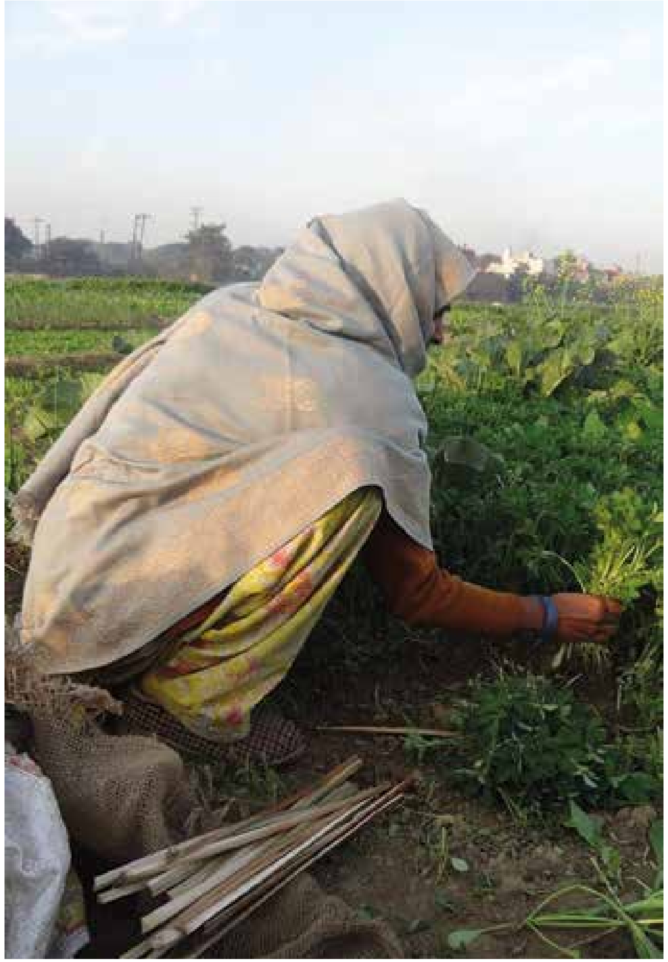

सुबह ८:००. पालक की कटाई

8 am: Harvesting spinach

पटेरा अपने आप उगता है और इसका इस्तेमाल पलक को बाँधने के लिए करते हैं. "मैं अभी भी हिंडन से पटेरा लता हूँ, पर अब पहले के मुकाबले कम होता है".

Pattera, which grows wild, is used for tying up spinach bunches. 'I still bring pattera from the Hindon, but it grows in less quantity than before.'

पहले हरेक परिवार दो-तीन गाय-भैंस रखता था.

‘Previously every household used to have two or three cows or buffalo.’

जिन किसानों के पास अब भी बड़ी ज़मीनें हैं, उनके खेतों में बैलों की जगह ट्रैक्टरों ने ले ली है.

For those farmers who still have large landholdings, tractors have replaced bullocks for ploughing

बदलता भूदृश्य | Changing Landscapes

बदलता भूदृश्य

किसी ज़माने में करहेड़ा मुख्यत: खेतीहर गाँव था. आज यहाँ ज़मीन ख़रीदने-बेचने का बाज़ार ज़ोर पकड़ रहा है. दिल्ली तक पहुँचने के लिए नई सड़कें बन चुकी हैं. करहेड़ा का मध्यम वर्ग गाँव के आस-पास एक नई जीवन शैली में निवेश कर रहा है. मल्टी-स्टोरी अपार्टमेंट बन रहे हैं, मॉल्स खुल चुके हैं, और मेट्रो भी आने वाली है. करहेड़ा में भी नया-पुराना, दोनों ही का घालमेल है. सड़कों पर कार और भैंस दोनों चलते हैं, अगर बिजली और पक्की गलियाँ हैं तो खुली नालियाँ भी हैं. और नए बड़े घरों के साथ छोटे-छोटे सस्ते मकान भी हैं.

करहेड़ा के आस-पास की खेती की ज़मीन पर अतिक्रमण लगातार कई सालों से हो रहा है. इसकी शुरुआत सन १९५० में हुई, जब सरकार ने गाँव के आस-पास की खेती की ज़मीन हिंडन एयरफोर्स स्टेशन बनाने के लिए ले ली. इसके बाद गाज़ियाबाद में औद्योगिक इलाक़े बन गए. और फिर प्रदूषण करने वाले उद्योगों को दिल्ली से विस्थापित कर यहाँ भेज दिया गया.

Changing Landscapes

Having once been a rural agricultural village, Karhera is now in the midst of a property boom. New roads have been established to better link this area to Delhi. Middle class urban residents are investing in new lifestyles in the vicinity of Karhera: high rise apartments are being built, shopping malls opened and there are plans for a metro. Within Karhera, there is a mix of old and new: modern cars share space with a few buffalo; electricity and paving contrasts with open drains; and modern and beautiful houses stand alongside cramped, cheap accommodation.

There has been a persistent encroachment of agricultural land and degradation of the environment adjacent to Karhera village. This process began in the 1950s with the government acquiring the adjoining cultivable land to build the Hindon Airforce Station. This was followed by the creation of industrial areas in Ghaziabad, and polluting factories relocated from Delhi were set up opposite Karhera village.

दो-तीन साल में सब ग़ायब हो जाएगा. खेती की ज़मीनों की तेज़ी से बिक्री हो रही है. अगले पाँच साल में मेट्रो यहाँ पहुँच जाएगी. उसके बाद, आपको एक लाख रुपये में भी घर नहीं मिलेगा

'It will all vanish in 2-3 years. The farm land has been sold at a faster rate... Within 5 years, the Metro will reach this place. After the Metro arrives in this place, you will not get a home here for even one lakh rupees'

नदी का पानी इतना साफ़ था कि तैरती मछलियाँ दिखाई देती थीं. पर अब काले पेंट की तरह काला हो गया है.

‘The river was so transparent that one could see fishes swimming beneath the water, but now the river water is black, like black paint’

करहेड़ा में शहर होने का भाव है/शहर की छाप है. यहाँ पक्के घर और पक्की सड़कें हैं. बिजली और पानी की सप्लाई भी है.

Karhera has an urbanised feel today. It has pukka houses and concrete roads as well as electricity and piped water.

12 08 20

गौशाला, जो की छोड़े हुए मवेशियों/ बैलों के रख-रखाव की जगह है, न तो स्थानीय लोगों को रोज़गार देती है और न ही करहेड़ा की गायों को लेती है

‘The Gaushala, a rescue centre for abandoned cattle, does not employ local people and does not accept the cows of Karhera’s villagers.’

सरकार ने हाल ही में गाँव की सार्वजनिक ज़मीन पर एक 'शहरी वन' बनाया है. "शहरी वन बनाने का मतलब ही गाँव से ज़मीन छीन लेना है. नहीं तो इसका नाम ग्राम वन रखते".

The Government has recently created an urban recreational area on land which was previously communal: 'The idea of making a City Forest is that they want the land to be taken away from the villagers. Otherwise its name would have been "Village Forest".'

बाहर से आने वाले लोगों को रहने की जगह चाहिए, हम लोग किराए पर मकान देते हैं. यह हमारे लिए बहुत फ़ायदे का सौदा है.

'Migrants need accommodation to live, we are renting houses to rent. It is a very profitable business for us.'

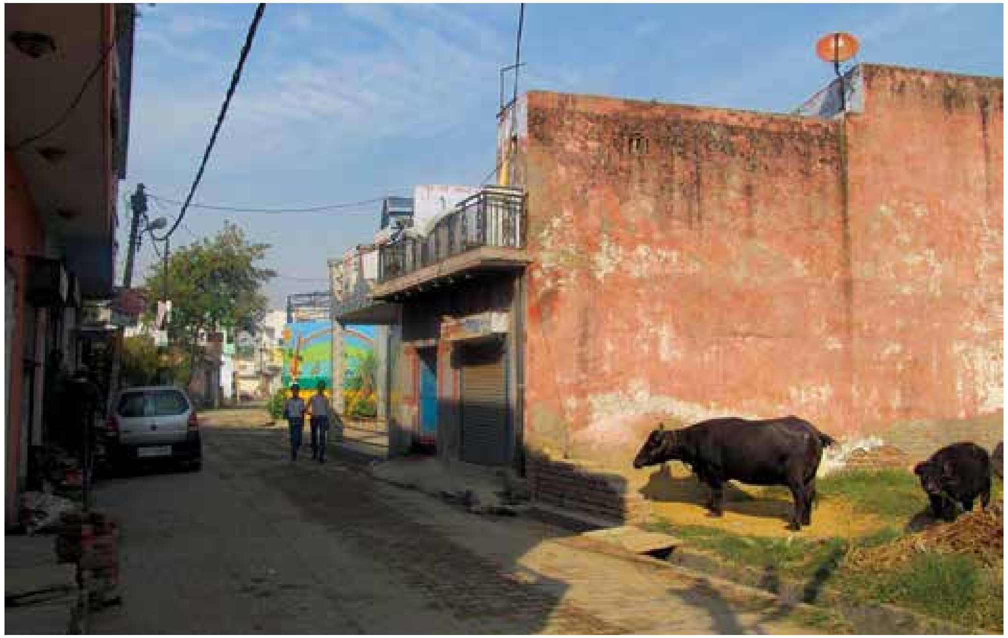

मैं खेत में काम करने वाला मजदूर हूँ. (शहरी) विकास से मुझे क्या फायेदा? कमरा किराये पर देने से मकान मालिकों को खूब फायेदा होता है

'I'm just an agricultural labourer, so I do not get any profit from any development [urbanisation]. The renting landlords are enjoying profit from renting rooms.'

करहेड़ा का एक गेट

One of the gates of Karhera

करहेड़ा के लोग | People of Karhera

करहेड़ा के लोग

पुराने ज़माने में करहेड़ा मुख्यत: चौहानों का गाँव था. कुछ दलित भी थे. सन २०१४ में एक सर्वे के मुताबिक यहाँ के मूल निवासी और प्रवासियों को मिलाकर कुल २२,५०० लोग थे. यहाँ के उद्योगों और दूसरे काम के अवसरों से प्रभावित होकर यहाँ सन १९६० से लोग आकर बस रहे हैं.

आज, यहाँ अलग-अलग जातियों, धर्मो और भौगोलिक क्षेत्रों के लोग रहते हैं.

कुछ लोग अभी भी खेती करते हैं. बाक़ी अन्य व्यवसायों जैसे शिक्षा, व्यापर, इंजिनीयरिंग आदि में हैं. मजदूरी और फैक्ट्रियों में भी लोग काम करते हैं.

People of Karhera

In the past, Karhera was mainly inhabited by high-caste Chauhans and a small Dalit population. A 2014 survey found approximately 22,500 residents, comprising of original residents and migrants. These migrants have been coming to Karhera since the 1960s, attracted by the industries and the potential for work.

Today Karhera's mixed population includes people from different castes, religions and geographic origins.

Some people still practice agriculture. Others work as teachers, engineers, pharmacists or businessmen, or are employed as manual labourers or factory workers.

गाँव के बुजुर्गों के साथ बैठक
Meeting with Village Elders

पारिवारिक अल्बम से एक तस्वीर

Photo from a family album

पारिवारिक अल्बम से एक तस्वीर

Wedding photos from family albums

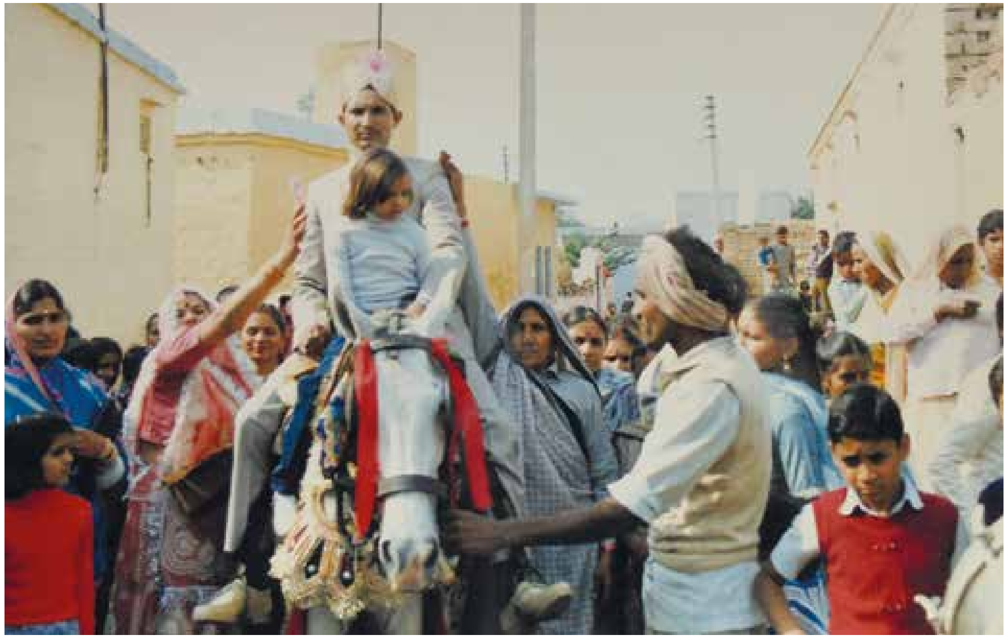

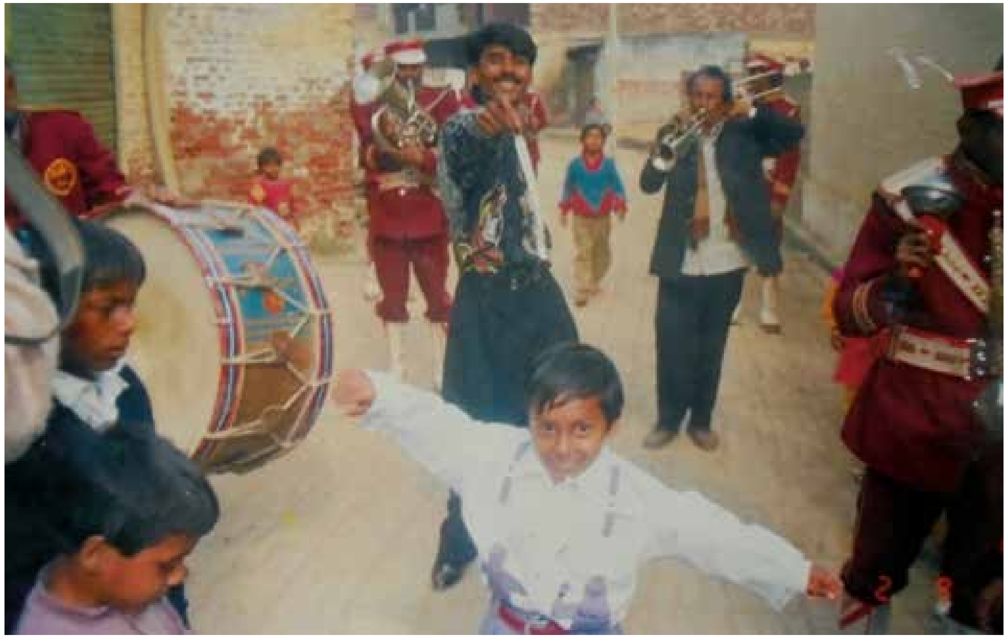

घर में महिलायें, कल और आज

Women at home, past and present

पालक की बिक्री में आदमियों की भूमिका अहम् है

Men play a significant role in marketing spinach

पारिवारिक अल्बम से एक तस्वीर

Photo from a family album

पारिवारिक अल्बम से विवाह की एक तस्वीर

Wedding photo from a family album

पारिवारिक अल्बम से एक तस्वीर

Photo from a family album

बीते ज़माने और आज के परिवहन के साधन

Transport, past and present

पारिवारिक अल्बम से एक तस्वीर

Photo from a family album

बाज़ार

The market

करहेड़ा में शोध करते हुए

Doing Research in Karhera

The Researching Rural Urban Futures Fieldwork Team

Funding

Contact:

For further information,
please contact:

Fiona Marshall
SPRU, University of Sussex
Brighton, UK
f.marshall@sussex.ac.uk

Ritu Priya
Centre of Social Medicine and
Community Health (CSMCH)
Jawaharlal Nehru University, Delhi
ritupriyajnu@gmail.com

Ramila Bisht
Centre of Social Medicine and
Community Health (CSMCH)
Jawaharlal Nehru University, Delhi
ramila.bisht@gmail.com

Linda Waldman
Institute of Development Studies
Brighton, UK
l.waldman@ids.ac.uk

Karhera is a peri-urban village in Ghaziabad, a district in the state of Uttar Pradesh in India. Indian and British-based researchers have been working in the area with local people since 2006.

Together with Karhera's residents, we have studied the changes in environment, agriculture, social patterns and governance, and looked at possible lessons for urban planning and development. With this photo book, we aim to reflect their experience, and we hope that this book will help them reflect on how they wish to shape their present and future.

Fiona Marshall and Ritu Priya